530

दृष्टि The Vision

drishti

GENERAL STUDIES (Test–20)

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	**GSM (M-I)-2420**	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

Name: Gaurav Chhimwal **Mobile Number:** [redacted]

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** _____

Center & Date: M.N (Delhi) **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 850088 0

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें बारह प्रश्न हैं तथा हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों में छपे हैं।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **TWELVE** questions printed both in **HINDI** and **ENGLISH**.*

All the questions are compulsory.

The number of marks carried by a question is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

केवल मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा भरा जाए (To be filled by Evaluator only)

Question Number	Marks	Question Number	Marks
1 (a)		5 (b)	
1 (b)		6 (a)	
2 (a)		6 (b)	
2 (b)		7.	
3 (a)		8.	
3 (b)		9.	
3 (c)		10.	
4 (a)		11.	
4 (b)		12.	
5 (a)			
Grand Total (सकल योग)			

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

drishti | दृष्टि The Vision

खंड - क/ SECTION – A

1. (a) वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय अनुसंधान में नीतिशास्त्र के संदर्भ क्या हैं? अपने उत्तर को उदाहरणों के साथ संपुष्ट कीजिये। (150 शब्द) 10

What are ethics in scientific and technological research? Provide examples to support your answer. (150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक अनुसंधान मूलतः एक शक्ति है। इस शक्ति का प्रयोग सुनिश्चित करता है कि यह शक्ति नैतिक होगी या अनैतिक। इसलिए वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक अनुसंधान में नीतिशास्त्र को महत्व दिया जाता है।

संदर्भ

(1) शोध परिणाम – मानव उत्थान, कल्याण में भागीदार होने चाहिए।
उदा० एडीसन → बल्ब का आविष्कार।

(2) मानव के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार को बढ़ावा देने वाले अनुसंधान हो। **उदा०** - GM फसलें।

(3) यह सुनिश्चित करना कि ये अनुसंधान मानव व मानवता

के विरोधी न हों,

[उदा०- रार्बट ओपनहाइमर - परमाणु बम।]

(4) जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक होकर मानव की रक्षा हेतु अग्रसर

(5) गरीब, वंचित, दिव्यांग जैसे समूह वर्गों का जीवन आसान करने हेतु अग्रसर हों,

इसीलिए वर्तमान में वैज्ञानिक सामाजिक उत्तरदायित्व इत्यादि पर बल दिया जा रहा है। इसके साथ ही विज्ञान के खतरनाक उपयोगों को रोकने हेतु की ब्लेचले घोषणा, हिरोशिमा AI प्रोसेस, MTCR, NSG जैसे हस्तक्षेपों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(b) क्या आपको लगता है कि महात्मा बुद्ध के लगभग सभी उपदेशों में संदर्भित अष्टांगिक मार्ग का सिद्धांत आज भी उनके अनुयायियों के लिये उतना ही स्पष्ट और व्यावहारिक है, जितना तब था जब उन्होंने इसे प्रथमत: प्रतिपादित किया था? (150 शब्द) 10

Do you think Buddha's eightfold path which he taught in virtually all his discourses, is as clear and practical to his followers today as it was when he first gave it? (150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अष्टांगिक मार्ग बुद्ध के प्रमुख उपदेशों में से एक है जो सम्यक आजीव, व्यायाम, समाहार, कर्मांत, दृष्टि, समाधि इत्यादि पर बल देकर मोक्ष प्राप्त करने अथवा बुद्धत्व को प्राप्त करने पर बल देता है।

अष्टांगिक मार्ग की प्रासंगिकता -

(1) भौतिकतावाद का निषेध → यह चरम भौतिकता का निषेध करता है तथा आवश्यकता के जितना संग्रह पर बल।

(2) सम्यक व्यायाम → वर्तमान समय में विभिन्न रोगों (प्रमुखत: जीवन शैली से उत्पन्न) के निराकरण में सहायक है।

(3) सम्यक दृष्टि → जीवन में अच्छे लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक है जो कि में की बजाय

पर' पर भी वरीयता देता है।

(4) सम्यक कर्म - जीवों प्रति दया, करुणा, अहिंसा, परोपकार को बढ़ावा देकर वर्तमान में चरम उपभोक्ता का परिहार करता है।

(5) इसके अतिरिक्त बुद्ध के ये सिद्धांत मध्यम मार्ग की वकालत करते हैं, जो वर्तमान में विभिन्न समस्याओं जैसे कि स्वजातिकेंद्रिकता इत्यादि का परिहार करते हैं।

(6) समग्रतः बुद्ध का यह मार्ग अच्छे तथा शांत जीवन के प्रति निर्देशित करता है।

इस तरह यह स्पष्ट है कि यह अष्टांगिक मार्ग बुद्ध के समय के साथ-साथ वर्तमान में भी महत्व रखता है।

drishti | दृष्टि The Vision

2. (a) जनसंपर्क (PR) में सोशल मीडिया के उपयोग ने सूचना के प्रसार और उपभोग के तरीके को रूपांतरित किया है। सोशल मीडिया के माध्यम से चलाए जा रहे जनसंपर्क अभियानों से जुड़ी नैतिक चुनौतियों का विश्लेषण कीजिये। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से आमजन से संवाद के दौरान जनसंपर्क पेशेवर नैतिक आचरण कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं? (150 शब्द) 10

The use of social media in public relations (PR) has transformed the way information is disseminated and consumed. Analyze the ethical challenges associated with social media PR campaigns. How can PR professionals ensure ethical conduct while engaging with audiences on social media platforms? (150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सोशल मीडिया, ने परंपरागत मीडिया को क्रांतिकारी रूप से बदला है। इसके अंतर्गत विभिन्न ब्लॉगिंग वेबसाइट, बुकमार्किंग साइट, मोबाइल एप जैसे कि फेसबुक, व्हाट्सेप इत्यादि शामिल किये जाते हैं।

सोशल मीडिया के माध्यम से चल रहे जनसंपर्क अभियानों के संदर्भ में चुनौतियां –

(1) फेक न्यूज का व्यापक प्रसार।
(2) पेड न्यूज की समस्या।
(3) गोचा पत्रकारिता का प्रचलन।
(4) पैपराजी के प्रचलन के कारण सेलिब्रिटी की निजता हनन का प्रचार।
(5) महिलाओं के गरिमा हनन के मामले जैसे- डीप फेक के माध्यम से।
(6) जातिगत ध्रुवीकरण, सांप्रदायिकता इत्यादि का उत्पन्न इत्यादि।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सोशल मीडिया के माध्यम से होने वाले जनसंचार में नैतिक आचरण निम्नलिखित रूप से सुनिश्चित किया जा सकता है —

(1) सोशल मीडिया एप्स की जवाबदेही सुनिश्चित करना।

(2) फ्री स्पीच तथा हेट स्पीच में बारीक संतुलन स्थापित करना।

(3) डीप फेक से उत्पन्न विवादग्रस्त पर वार मार्किंग।

(4) डेटा सुरक्षा की व्यवस्था को मजबूत करना।

(5) नागरिकों में व्यापक जागरूकता स्थापित करना।

(6) फेक चेक संस्थानों को बढ़ावा जैसे कि - Alt News इत्यादि।

सारतः सोशल मीडिया ने समाज को विभिन्न रूपों में सशक्त बनाया है हालांकि इसके विनियमन की भी सख्त आवश्यकता है।

(b) डेटा गोपनीयता एवं इसकी सुरक्षा के संबंध में शासन, व्यक्तियों की सुरक्षा के लिये समाज का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इस कथन के आलोक में, गोपनीयता एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के मध्य संतुलन बनाने में आने वाली नैतिक चुनौतियों पर चर्चा कीजिये। (150 शब्द) 10

Governance around data privacy and security is an important part of society to protect individuals. In the light of this statement, discuss the ethical challenges faced in balancing privacy and national security. (150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

वर्तमान समय में सूचना क्रांति के जरिये संपूर्ण विश्व एक गाँव के रूप में रूपांतरित हो गया है। किंतु इससे डेटा गोपनीयता तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के रूप संतुलन में अनेक चुनौतियाँ भी सामने आयी हैं—

(1) नागरिकों की निजता की रक्षा करें या राष्ट्र की एकता, अखंडता की।

(2) नागरिकों की फ्री स्पीच को बढ़ावा दें या सामाजिक सद्भाव, सौहार्द्र को।

(3) फ्री स्पीच तथा हेट स्पीच के बीच का अंतर कई बार स्पष्ट नहीं होता है।

(4) सार्वजनिक सुरक्षा का मुद्दा।

(5) अन्य देशों से उपकरणों के आयात पर बल देकर नागरिकों के पास विकल्पों को बढ़ाने या आयात पर प्रतिबंध।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

समाधान —

(1) डेटा सुरक्षा के संदर्भ में स्पष्ट तथा सुपरिभाषित तंत्र।
हालिया — व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधि. में ऐसे प्रावधान किये गये हैं।

(2) फ्री स्पीच तथा हेट स्पीच के मध्य बारीक संतुलन स्थापित करना।

(3) साइबर सुरक्षा ढाँचे को मजबूत करना

(इत्यादि)

इन हस्तक्षेपों के साथ डेटा सुरक्षा तथा राष्ट्र की सुरक्षा के मध्य संतुलन को बढ़ाया दिया जा सकता है।

drishti | दृष्टि The Vision

3. नीचे महान विचारकों के तीन उद्धरण दिये गए हैं। इनमें से प्रत्येक उद्धरण वर्तमान संदर्भ में आपको क्या संदेश देता है?

Given below are three quotations of great thinkers. What do each of these quotations convey to you in the present context?

(a) देशभक्ति हमारा अंतिम आध्यात्मिक आश्रय नहीं हो सकती; मेरा आश्रय मानवता है। – रवींद्रनाथ टैगोर

(150 शब्द) 10

Patriotism cannot be our final spiritual shelter; my refuge is humanity. -Rabindranath Tagore.
(150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

टैगोर का यह कथन देश भक्ति अथवा राष्ट्रभक्ति से आगे बढ़कर विश्व बंधुत्व तथा मानवता को वरीयता देता है।

देश भक्ति अंतिम आध्यात्मिक आश्रय क्यों नहीं?

(1) उग्र राष्ट्रवाद की समस्या, उदा० - नाज़ी जर्मनी

(2) अन्य देशों से टकराहट की संभावना, उदा० - भारत -पाकिस्तान विवाद

(3) विभिन्न मुद्दों (वैश्विक) जैसे कि जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद इत्यादि का समाधान नहीं हो पाता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(5) व्यक्ति की चेतना पूर्णतः विकसित नहीं हो पाती है।

आशय मानवता क्यों?

(1) सभी मनुष्यों की तात्विक एकता की वकालत
↓
धर्म, रंग, रूप, देश, निवास से परे सभी मनुष्य एक ही हैं।

(2) वैश्विक समस्याओं की समाधान की अधिक संभावना। उदा॰- जलवायु परिवर्तन
समान किंतु विभेदीकृत उत्तरदायित्व

(3) शरणार्थी समस्या नहीं होगी।

(4) अंतरराष्ट्रीय संघर्ष जैसे रूस-यूक्रेन, इजरायल हमास नहीं होंगे।

इस तरह टैगोर का यह कथन वर्तमान की भी कई समस्याओं के निराकरण को प्रस्तुत तथा संबोधित करता है। भारत के G-20 सम्मेलन में वसुधैव कुटुंबकम के रूप में इसका प्रभाव देखा जा सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(b) थोड़ा-सा अभ्यास टन भर उपदेश से अधिक मूल्यवान है। - महात्मा गांधी (150 शब्द) 10

An ounce of practice is worth more than tons of preaching. -Mahatma Gandhi.(150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गांधी जी का यह कथन अभ्यास के महत्व को स्थापित करता है। रहीम के दोहे के रूप में कहें तो -

"करत-करत अभ्यास तें, जड़मति होत सुजान।
रसरि आवत जात ते, सिल पर पड़त निशान॥"

अभ्यास बेहतर क्यों?

(1) अभ्यास से ही उत्कृष्टता की स्थिति पैदा होती है।

(2) ऊर्जा एक निश्चित दिशा में खर्च।

(3) गांधी के 'श्रम के मूल्य' की अवधारणा के अनुरूप है।

(4) व्यक्ति को आंतरिक रूप से संतुष्टि का अनुभव करता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उपदेश बेहतर क्यों नहीं?

(1) कोरे उपदेश बेहतर नहीं, क्योंकि वह गांधी के अनुरूप, मनसा, वाचा कर्मणा के अनुरूप नहीं।
(2) उत्कृष्टता हासिल नहीं होती।

एडीसन, नीरज चोपड़ा, अरशद नदीम, शीतल देवी जैसे उदाहरण यह ही स्पष्ट करते हैं कि निरंतर अभ्यास ही सफलता की कुंजी है। कोरे उपदेश से नैराश्य की स्थिति में ही जाता क्रंण, अवसाद की स्थिति में ही जाता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(c) जब भी आप कोई काम करें, तो ऐसे व्यवहार करें जैसे पूरी दुनिया आपको देख रही हो। -थॉमस जेफरसन

(150 शब्द) 10

Whenever you do a thing, act as if all the world were watching. -Thomas Jefferson (150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

थॉमस जेफरसन का यह कथन व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले हर काम के संदर्भ में नैतिक रहने की प्रेरणा प्रदान करता है।

कोई भी काम करते समय, ऐसे व्यवहार करने के फायदे?

---

(1) व्यक्ति चाहकर भी अनैतिक नहीं हो सकता है।

(2) भ्रष्टाचार की बुराई कम या समाप्त होती है।

(3) वासना तथा विवेक के संघर्ष में व्यक्ति विवेक का रास्ता चुनता है।

(4) सार्वजनिक सेवाओं में लीकेज की समस्या का समाधान होगा,

(5) राजनीति में दलबदल, अवसरवादिता इत्यादि बुराईयाँ कम होंगी।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(6) समाज अंततोगत्वा परम शुभ की ओर अग्रसर।

(7) अपराध, हिंसा की घटनाओं में कमी आयेगी।

(8) नैतिक मूल्यों का पतन रुकेगा।

(9) वंचित वर्गों का सशक्तिकरण सुनिश्चित हो पायेगा।

(10) सर्वोदय तथा अंत्योदय जैसे मूल्य साकार होंगे।

इस तरह यह स्पष्ट है कि स्वयं के कार्यों में उपेक्षा का संदर्भ ग्रहण करने से नैतिक उत्कृष्टता तथा सद्गुण की स्थिति प्राप्त की जा सकती है।

4. (a) भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) को परिभाषित कीजिये। इसके प्रमुख घटकों पर चर्चा कीजिये। स्पष्ट कीजिये कि प्रत्येक घटक लोक प्रशासन में प्रभावी नेतृत्व में किस प्रकार योगदान देता है। (150 शब्द) 10

Define Emotional Intelligence (EI). Discuss its major components. Explain how each component contributes to effective leadership in public administration. (150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सेलोवी तथा मेयर मॉडल के अनुसार स्वयं की तथा दूसरों की भावनाओं तथा मनःस्थितियों को सटीक रूप से समझने तथा उनका उनका प्रबंधन करने की क्षमता भावनात्मक बुद्धिमत्ता कहलाती है।

डेनियल गोलमैन ने अपनी पुस्तक 'EI - वाय इट कैन मैटर मोर दैन आईक्यू' में EI के निम्नलिखित घटक बताये हैं-

- **स्व जागरूकता** – स्वयं की क्षमताओं तथा कमजोरियों का ज्ञान। उदा॰- सचिन तेंदुलकर
- **स्वनियंत्रण** – स्वयं की भावनाओं की तीव्रता व अभिव्यक्ति का नियमन (उदा॰ गांधी जी चौरी-चौरा के बाद)
- **स्व प्रेरण** – कठिन स्थितियों में स्वयं को प्रेरणा देना। उदा॰ कोरोना के दौरान डॉक्टर की भूमिका)
- **सहानुभूति** – दूसरों की भावनाओं को समझना। उदा॰- मंडेला
- **सामाजिक कौशल** – अन्य लोगों से तालमेल बैठाने की क्षमता। उदा॰ झारखंड के IAS कुमार उज्ज्वल।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रत्येक घटक का लोक प्रशासन में उपयोग -

(1) स्व जागरूकता → स्वयं की कमजोरी तथा क्षमता के आधार पर निर्णय लेना।

[उदा०] - झारखंड के IAS अधिकारी पर्सुएशन क्षमता अधिक - माओवाद से प्रभावित क्षेत्र पर्यटक स्थल में रूपांतरित

(2) स्व नियमन → आपात स्थिति में नियमित अभिव्यक्ति

[उदा०] - अलीगढ़ के ~~SD~~ SP आकाश कुलहरि दंगाई भीड़ को शांत

(3) स्व प्रेरणा - निराशा के दौर में स्वयं को प्रेरित

[उदा०] - इसरो → चंद्रयान 2 असफल
→ चंद्रयान 3 - सफल
(S सोमनाथ की भूमिका)

(4) समानुभूति - बेहतर कार्य संस्कृति
→ सेवाओं की त्वरित पहुँच।

(5) सामाजिक कौशल - पर्सुएशन कौशल उत्पत्ति के माध्यम से जनता को समझाना उत्पाद।

यही कारण है कि वर्तमान में प्रशासन ~~में~~ EI का महत्व ~~अधिक~~ अत्यधिक है।

(b) नागरिक अधिकार पत्र तथा सहभागी शासन की अवधारणा के बीच संबंधों का परीक्षण कीजिये।

(150 शब्द) 10

Examine the relationship between Citizen Charters and the concept of participatory governance.

(150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

नागरिक अधिकार पत्र एक ऐसा दस्तावेज है जिसमें संगठन के लक्ष्यों, प्रदान की जाने वाली सेवा मों, शिकायत निवारण तंत्र इत्यादि के संबंध में स्पष्ट सूचना दी जाती है।

नागरिक अधिकार तथा सहभागी शासन

(1) सेवाओं की गुणवत्ता बेहतर।

(2) शिकायत निवारण के द्वारा फीडबैक लिये जाते हैं। नागरिकों के

(3) फीडबैक के आधार पर शिकायतों का निवारण तथा सेवा गुणवत्ता में सुधार।

(4) प्रशासन की जवाबदेहिता सुनिश्चित होती है।

(5) प्रशासन अनुक्रिया शील होता है।

चिंताएं

- स्थानीय भाषा में न होना
- वन साइज फिट ऑल मॉडल।
- प्रशासनिक शिथिलता
- नागरिकों में जागरूकता न होना
- नागरिक चार्टर को अपडेट न करना
- शिकायतों पर रिस्पांस न करना, इत्यादि।

यही कारण है कि नागरिक चार्टर को कानूनी बंदिश देने की बात कही जा रही है।

drishti | दृष्टि The Vision

5. (a) समकालीन भारतीय राजनीति के संदर्भ में, मतदाता व्यवहार पर संज्ञानात्मक असंवादिता के संभावित निहितार्थों और लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर इसके प्रभाव का विश्लेषण कीजिये। (150 शब्द) 10

In the context of contemporary Indian politics, analyze the potential implications of cognitive dissonance on voter behavior and its impact on the democratic process. (150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संज्ञानात्मक असंवादिता उस स्थिति को कहते हैं जब व्यक्ति के भीतर निम्न लिखित दो स्थितियाँ पायी जाएं

- अभिवृत्ति तथा अभिवृत्ति के बीच संगति न होना
- अभिवृत्ति तथा व्यवहार के बीच संगति का न होना

ये दोनों ही स्थितियाँ दुःख तथा तनाव उत्पन्न करती हैं।

मतदाता व्यवहार पर संज्ञानात्मक असंवादिता

(1) स्वयं राजनीतिक सुधार चाहता है किंतु चुनाव के समय, धर्म, जाति के नारों से प्रभावित होना।

(2) अच्छी सरकार की अपेक्षा किंतु चुनाव के समय धनबल इत्यादि से प्रभावित होना।

drishti | दृष्टि The Vision

(3) देश के ~~तीव्र~~ विकास का उद्देश्य ~~किंतु~~ मतदान में सहभागिता न करना।

ये सारे उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि भारतीय मतदाताओं में विविध स्तरों पर संस्थानात्मक असंवादिता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर प्रभाव –

- राजनीति में धनबल, बाहुबल का प्रभाव
- युवाओं का राजनीति से मोहभंग
- राजनीतिक सुधार क्रियान्वित नहीं हो पाते हैं।
- देश का विकास हतोत्साहित।
- राजनीति में धर्म व जाति का बोलबाला।

इस तरह इस संस्थानात्मक असंवादिता का निराकरण कर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को परिपक्व बनाया जा सकता है।

(b) परिवार में अभिभावक अपने बच्चों के नैतिक विकास में मुख्य शिक्षक के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कैसे करते हैं? (150 शब्द) 10

How do parents play an important role as the main educator in the family in moral development of their children? (150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

डॉ॰ कलाम के अनुसार यदि देश को भ्रष्टाचार से मुक्त बनाना है तो इस प्रक्रिया में तीन व्यक्ति प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं - माता, पिता, शिक्षक।

अभिभावकों की नैतिक विकास में भूमिका -

(1) सहयोग, साहचर्य जैसे मूल्यों का विकास
उदा॰ - लंच बॉक्स साझा करने हेतु प्रेरित

(2) आधारभूत मूल्यों जैसे की सम्मान करना, आदर करना इत्यादि का विकास,

(3) इस प्रक्रिया में अभिभावक दंड तथा पुरस्कार की नीति तथा अपेक्षा के माध्यम से बच्चे के आचरण को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं,

(4) आचरण के अवलोकन के माध्यम से भी बच्चे नैतिक रूप से विकसित होते हैं।

इस तरह यह स्पष्ट है कि अभिभावक बच्चे के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

6. (a) "लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र का तात्पर्य केवल नियमों का पालन करना नहीं है, बल्कि सही विकल्प का चयन करना भी है।" स्पष्ट कीजिये। (150 शब्द) 10

"Ethics in public administration is not just about following rules, but also about making the right choices." Explain. (150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नीतिशास्त्र का तात्पर्य है आचरण अथवा चरित्र का विज्ञान जो कि सही और गलत में भेद करना सिखाता है। द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग ने लोक प्रशासन में नैतिकता पर विशेष बल दिया है।

नियमों का पालन करना ही नैतिकता नहीं है, सही विकल्प का चयन करना भी है -

(1) अत्यधिक नियम प्रशासन को अत्यधिक कठोर बनाते हैं। ऐसी स्थिति में 'प्रशासन' के बजाय 'प्रशासन के नियम' अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

(2) नागरिकों पर अत्यधिक नियमों का बोझ उनके 'कल्याण' को प्रभावित कर सकता है।

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(3) कभी कभी कानून के बजाय 'कानून की भावना' का पालन भी करना होता है।

(4) नियम प्रत्येक स्थिति को संबोधित नहीं कर सकते हैं अत: 'अंतरात्मा', 'संविधान' की प्रेरणा का प्रयोग कर उपयुक्त विकल्प का चयन भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

इन्हीं संदर्भों में कहा जाता है कि लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र का तात्पर्य केवल नियमों का पालन करना नहीं है अपितु, उपयुक्त विकल्पों का चयन करना भी है। हालांकि उपर्युक्त विकल्पों के चयन का आधार भी संविधान तथा कानून हो सकते हैं।

(b) अच्छी शिक्षा कल्पनातीत है यदि वह उत्तम जीवन और सामाजिक कल्याण के लिये आवश्यक मूल्यों को विकसित करने में विफल रहती है। टिप्पणी कीजिये। (150 शब्द) 10

Good education is inconceivable if it fails to inculcate values essential to good life and social well-being. Comment. (150 Words) 10

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अल्बर्ट आइंस्टीन का मानना था कि शिक्षा व्यवस्था ऐसे गुणों का विकास करने में विफल रही है जो जीवन पर्यंत हमारे काम आये। इसका कारण बताते हुए वो कहते हैं कि जीवन की माँगें इतनी अधिक हैं कि शिक्षा व्यवस्था उनको पूरा नहीं कर सकती।

अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा व्यवस्था को केवल पाठ्यक्रम पूर्ण केंद्रित रहने के बजाय ऐसे कौशलों तथा क्षमताओं के विकास पर ध्यान देना चाहिए जो एक तरफ व्यक्तिगत जीवन को उन्नत करे, तो दूसरी तरफ सामाजिक आवश्यकताओं को भी पूरा करे।

drishti | दृष्टि The Vision

कोठारी आयोग ने इस संदर्भ में निम्न लिखित अनुशंसाएँ की थी -

(1) व्यवसायिक पाठ्यक्रम पर बल।

(2) नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा पर बल देना।

(3) पाठ्यक्रम के साथ अन्य गतिविधियों जैसे - फील्ड वर्क, भ्रमण, निबंध, खेल इत्यादि पर बल।

(4) शिक्षकों को रोल मॉडल के रूप में व्यापित करना।

(5) समय-समय पर पाठ्यक्रम को अद्यतित करना।

(6) समाज के साथ बच्चों का लगातार संपर्क।

(7) इसके साथ ही CBSE द्वारा विकसित सोशल एंड इमोशनल लर्निंग पर भी ध्यान दिया जा सकता है।

(8) जापान तथा नीदरलैंड की तरह मूल्य आधारित शिक्षा को अपनाना।

इन अनुशंसाओं को अपनाकर शिक्षा व्यवस्था को उन्नत बनाया जा सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

खंड - ख / SECTION - B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

7. श्री अर्जुन एक प्रतिष्ठित व्यवसायी हैं और अपने समुदाय में एक प्रमुख व्यक्ति हैं। अपने परोपकार और व्यावसायिक कौशल के लिये जाने जाने वाले, उन्होंने विभिन्न सामाजिक कारणों के लिये उदार व सहायक होने के लिये प्रतिष्ठा बनाई है। उनके बेटे, रवि, जो 25 वर्षीय महत्त्वाकांक्षी संगीतकार हैं, को हाल ही में अंतिम चरण की यकृत संबंधी बीमारी का पता चला है। रवि की कम उम्र और उसकी हालत की गंभीर प्रकृति को देखते हुए, यह निदान परिवार के लिये एक गहरा आघात है।

मेडिकल टीम ने श्री अर्जुन को सूचित किया है कि रवि को जीवित रहने के लिये तत्काल यकृत प्रत्यारोपण की आवश्यकता है। यद्यपि, अंगदान की प्रतीक्षा सूची लंबी है और समय पर यकृत मिलने की संभावना बहुत कम है। प्रत्यारोपण के बिना बीतने वाला प्रत्येक दिन रवि के बचने की संभावना को कम करता है, जिससे श्री अर्जुन और उनके परिवार की चिंता व हताशा बढ़ती जा रही है।

जिस अस्पताल में रवि का उपचार चल रहा है, उसके चिकित्सा निदेशक डॉ. मेहता अधिकरण समिति में हैं और श्री अर्जुन के पुराने मित्र हैं। उनकी दोस्ती उनके कॉलेज के दिनों से है और विगत् कई वर्षों से वे एक-दूसरे की सहायता करते आए हैं। कई वर्ष पूर्व, डॉ. मेहता के जीवन के एक मुश्किल दौर में, श्री अर्जुन ने उन्हें वित्तीय सहायता और व्यक्तिगत परामर्श देकर महत्त्वपूर्ण सहायता की थी। डॉ. मेहता हमेशा श्री अर्जुन के दयालुता और समर्थन के लिये उनके आभारी रहे हैं।

उनके घनिष्ठ संबंधों को देखते हुए, श्री अर्जुन को डॉ. मेहता से रवि के मामले को तेज़ी से निपटाने और प्रतीक्षा सूची में अन्य रोगियों की तुलना में उसे प्राथमिकता देने के लिये कहने का प्रबल प्रलोभन अनुभव होता है। अपने बेटे की स्थिति की तात्कालिकता और उसके द्वारा अनुभव की जा रही भावनात्मक बैचेनी के कारण श्री अर्जुन के लिये इस तरह के अनुरोध के व्यापक नीतिशास्त्रीय निहितार्थों पर विचार करना मुश्किल हो जाता है।

उपरोक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये

(a) इस स्थिति में डॉ. मेहता को कौन-से नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर निर्णय लेना चाहिये?

(b) डॉ. मेहता को सभी मरीजों के लिये उचित उपचार सुनिश्चित करते हुए श्री अर्जुन के व्यक्तिगत दबाव को कैसे संभालना चाहिये?

(c) अंग आवंटन प्रक्रिया में हितों के संघर्ष को रोकने के लिये क्या उपाय कार्यान्वित किये जा सकते हैं?

(250 शब्द) 20

Mr. Arjun is a well-respected businessman and a prominent figure in his community. Known for his philanthropy and business acumen, he has built a reputation for being generous and supportive of various social causes. His son, Ravi, a 25-year-old aspiring musician, has recently been diagnosed with end-stage liver disease. The diagnosis has come as a severe blow to the family, given Ravi's young age and the critical nature of his condition.

The medical team has informed Mr. Arjun that Ravi requires an immediate liver transplant to survive. The organ donation waiting list, however, is long, and the chances of receiving a liver in time are slim. Each day that passes without a transplant decreases Ravi's chances of survival, adding to the anxiety and desperation felt by Mr. Arjun and his family.

Dr. Mehta, Medical Director of the Hospital where Ravi is being treated, is on the authorization committee and an old friend of Mr. Arjun. Their friendship dates back to their college days, and over the years, they have supported each other through various personal and professional challenges. Years ago, during a particularly difficult time in Dr. Mehta's life, Mr. Arjun extended significant help, providing financial

drishti | दृष्टि The Vision

support and personal counsel. Dr. Mehta has always felt indebted to Mr. Arjun for his kindness and support.

Given their close relationship, Mr. Arjun feels a strong temptation to ask Dr. Mehta to fast-track Ravi's case and prioritize him over other patients on the waiting list. The urgency of his son's condition and the emotional turmoil he is experiencing make it difficult for Mr. Arjun to consider the broader ethical implications of such a request.

Answer the following questions based on the above case study

(a) What ethical principles should guide Dr. Mehta's decision in this situation?

(b) How should Dr. Mehta handle the personal pressure from Mr. Arjun while ensuring fair treatment for all patients?

(c) What measures can be implemented to prevent conflicts of interest in the organ allocation process? (250 Words) 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

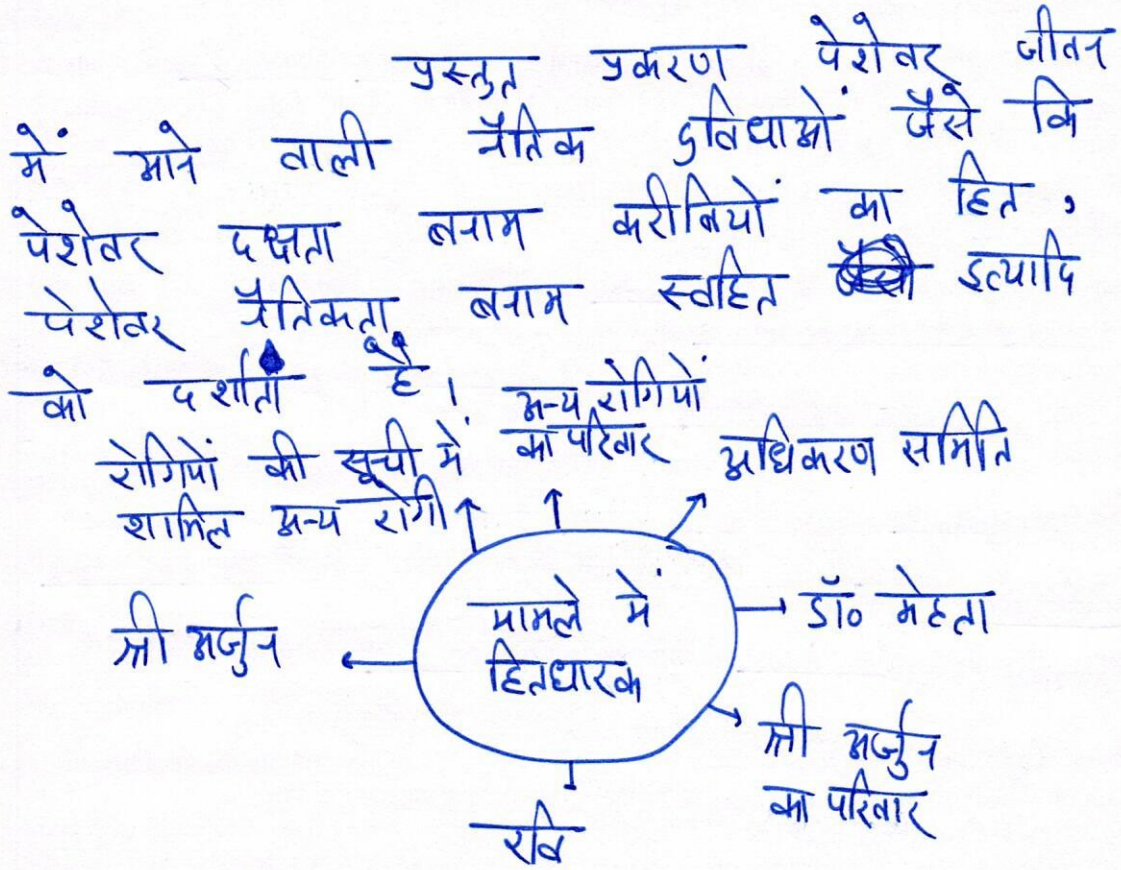

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(a) डॉ० मेहता को इस नैतिक दुविधा की स्थिति में निम्नलिखित नैतिक सिद्धांतों से प्रेरणा लेनी चाहिए -

(1) हिप्पोक्रेटिक ओथ

(2) पेशेवर नैतिकता

(3) व्यवसायिक दक्षता

(4) भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा पर्सुएशन कौशल का प्रयोग

(5) उपयोगितावाद - अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख

(6) कांट का कर्तव्य वाद
कर्तव्य के लिए कर्तव्य

(7) बौद्ध धर्म के कुशल व अकुशल कर्म की अवधारणा।

(8) जैन धर्म के स्यादवाद से प्रेरणा

(9) गांधी जी का साधन - साध्य पवित्रता का सिद्धांत।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(b) उपरोक्त नैतिक सिद्धांतों से प्रेरणा लेते हुए श्री अर्जुन के व्यक्तिगत दबाव को निम्नलिखित तरीके से संभाला जा सकता है —

(1) भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रयोग कर श्री अर्जुन को धैर्य रखने की अपील करना।

(2) रवि की स्वास्थ्य बिगड़ती तथा सुरक्षा को और अधिक बढ़ा देना।

(3) अन्य मरीजों के हितों से समझौता न करते हुए 'यकृत' की व्यवस्था के अन्य विकल्पों जैसे कि सोशल मीडिया रूप के जरिये अपील, अन्य अस्पतालों से इस संदर्भ में जानकारी लेना इत्यादि को अपनाया।

(4) जब तक यकृत की व्यवस्था नहीं हो जाती है तब तक डॉक्टरों के विशेष दल को रवि के उपचार हेतु नियुक्त किया जा सकता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(c) अंग आवंटन की प्रक्रिया में हितों के संघर्ष को रोकने के उपाय -

(1) ~~अर्जुन~~ अर्जुन को पर्सुएड करना कि अन्य रोगियों के हितों से समझौता करना नैतिक सिद्धांतों जैसे कि सत्यनिष्ठा, करुणा इत्यादि के खिलाफ होगा,

(2) भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रयोग कर स्थितियों की जटिलता व तनाव को कम करने का प्रयास।

(3) हिप्पोक्रेटिक शपथ, संविधान के अवसर की समता जैसे मूल्यों से प्रेरणा लेते हुए, रवि के उपचार हेतु अन्य रोगियों के हितों से समझौता किए बिना कुछ व्यक्तिगत प्रयास किये जा सकते हैं -

जैसे → NOTTO के केंद्रों से संपर्क
↳ प्रक्रिया में तेजी लाना। इत्यादि।

इस तरह अंतिम रूप में अन्य रोगियों के साथ-साथ रवि का इलाज लक्ष्य होना चाहिए न कि अन्य रोगियों की कीमत पर रवि का इलाज।

drishti | दृष्टि The Vision

8. आप एक ऐसे ज़िले के ज़िला मजिस्ट्रेट (DM) हैं जो अपने धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व के लिये जाना जाता है। समुदाय के भीतर गहराई से संबंधित एक प्रमुख धार्मिक संगठन एक बड़े पैमाने पर धार्मिक आयोजन की योजना बनाता है। यद्यपि, संगठन को वित्तीय बाधाओं का सामना करना पड़ता है और इतनी बड़ी सभा के लिये आवश्यक सुरक्षा उपायों की पूर्ण तैनाती सुनिश्चित करने के लिये आवश्यक धन की कमी होती है। आप संभावित जोखिमों से अवगत हैं, विशेष रूप से ऐसे सघन भीड़ वाले आयोजनों में भगदड़ की संभावना। आपकी आपत्तियों के बावजूद, आपको आयोजन की अनुमति देने के लिये भारी सामाजिक और राजनीतिक दबाव का सामना करना पड़ता है। स्थानीय राजनेता, जो धार्मिक गुरुओं और उनके संगठनों को महत्त्वपूर्ण वोट बैंक के रूप में देखते हैं, प्रभाव डालते हैं, आपसे कठोर शर्तों के बिना आयोजन को मंज़ूरी देने का आग्रह करते हैं। दबाव में आकर, आप कुछ शर्तों के साथ अनुमति दे देते हैं। आयोजन के दिन, भगदड़ होती है, जिसके परिणामस्वरूप **100** लोगों की दुखद मृत्यु हो जाती है।

इस त्रासदी से समुदाय सदमे और शोक में है एवं मीडिया और जनता का ध्यान तुरंत इस बात पर जाता है कि इसके लिये कौन ज़िम्मेदार है। ज़िला मजिस्ट्रेट के रूप में, आप विवाद के केंद्र में हैं। उत्तरदायित्व का प्रश्न भी बड़ा है तथा धार्मिक संगठन और स्थानीय प्रशासन दोनों ही जाँच के दायरे में आते हैं।

इसके बाद, भगदड़ के कारणों की जाँच करने और यह निर्धारित करने के लिये एक आधिकारिक जाँच शुरू की जाती है कि क्या लापरवाही की इसमें कोई भूमिका थी। जाँच से पता चलता है कि धार्मिक संगठन, अपनी वित्तीय बाधाओं के बावजूद, भीड़ को नियंत्रित करने के बुनियादी उपायों को भी कार्यान्वित करने में विफल रहा। यद्यपि, जाँच इस तथ्य की ओर भी इशारा करती है कि आपके कार्यालय द्वारा दी गई अनुमति में आवश्यक शर्तों और निरीक्षण का अभाव था, जो आपदा का कारण बना।

(a) इस मामले में शामिल हितधारकों का उल्लेख कीजिये।

(b) इसमें नीतिशास्त्रीय चुनौतियाँ क्या हैं?

(c) भारत में भगदड़ की घटनाएँ आम क्यों हैं और इनमें से कई धार्मिक समारोहों में क्यों हुई हैं? आप इसे रोकने के लिये सबसे पहले क्या उपाय करेंगे? (250 शब्द) 20

You are the District Magistrate (DM) of a district known for its religious and cultural significance. A prominent religious organization, deeply embedded within the community, plans a large-scale religious event. The organization, however, faces financial constraints and lacks the necessary funds to ensure the full deployment of safety measures required for such a large gathering. You are aware of the potential risks, especially the possibility of a stampede in such densely packed events. Despite your reservations, you face immense societal and political pressure to grant permission for the event. Local politicians, who see the religious gurus and their organizations as significant vote banks, exert significant influence, urging you to approve the event without stringent conditions. Yielding to pressure, you give permission, albeit with reservations. On the day of the event, a stampede occurs, resulting in the tragic loss of 100 lives.

The tragedy leaves the community in shock and mourning, and the media and public quickly turn their attention to finding who is responsible. As the District Magistrate, you are at the center of the controversy. The question of accountability looms large, and both the religious organization and the local administration come under scrutiny.

In the aftermath, an official inquiry is launched to investigate the causes of the stampede and determine whether negligence played a role. The inquiry reveals that the religious organization, despite its financial constraints, failed to implement even basic crowd control measures. However, the inquiry also points to the fact that the permission granted by your office lacked the necessary conditions and oversight, contributing to the disaster.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(a) Mention the stakeholders involved in this case.

(b) What are the ethical challenges involved here?

(c) Why are Crowd crushes common in India and many of them have occurred at religious gatherings? What measures would you take to avoid it in the first place? (250 Words) 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हालिया उत्तरप्रदेश की हाथरस, ब्रजघाट क्षेत्र में हुई घटना के समान यह प्रस्तुत प्रकरण धार्मिक आयोजनों में सुरक्षा व्यवस्थाओं की कमी, प्रशासनिक शिथिलता जैसे मुद्दों को उठाता है।

(a)

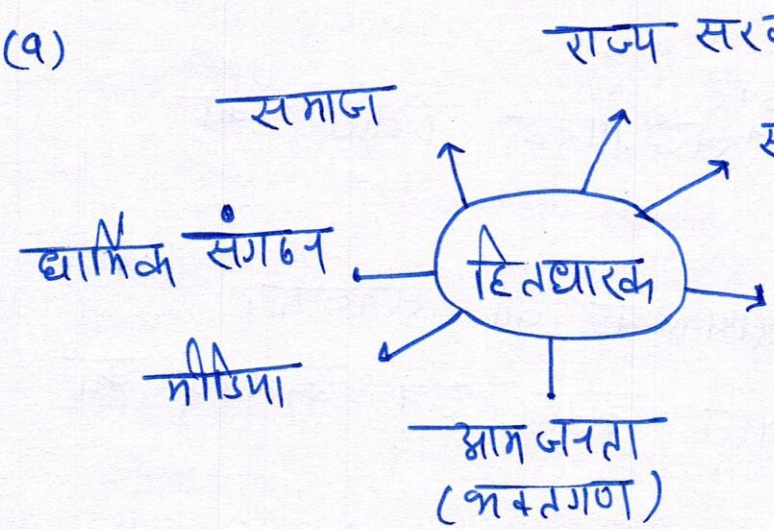

(b) प्रस्तुत प्रकरण में शामिल नीतिशास्त्रीय चुनौतियां –

(1) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार बनाम जीवन का अधिकार।

drishti | दृष्टि The Vision

(2) धार्मिक संगठन द्वारा वित्तीय बाधाओं के बावजूद आयोजन करवाना।

(3) आम जनता में सुरक्षा व्यवस्था के प्रति जागरूकता का अभाव।

(4) राजनेताओं का दबाव।

(5) धर्म का वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल।

(6) प्रशासन के ऊपर राजनीतिक दबाव की चुनौती।

(7) प्रशासनिक शिथिलता की समस्या।

(8) राजनीतिक दबाव बनाम जन कल्याण का मुद्दा।

(9) आयोजनों को अनुमति देने के लिए मानक संचालन प्रक्रिया / वस्तुनिष्ठ सिद्धांतों का न होना।

(10) इस प्रकार के आयोजनों से अन्य जनता के आवागमन का अधिकार इत्यादि का प्रभावित होना।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ङ) भारत में भगदड़ की घटनाओं के कारण -

(1) अत्यधिक जनसंख्या → आयोजन स्थल पर भीड़भाड़ अधिक।

(2) बिना स्थल सर्वेक्षण, भीड़ प्रबंधन प्रणाली के निरीक्षण के ही आयोजनों को अनुमति देना।

उपा० - सूरत में लगी आग।

(3) धार्मिक, सामाजिक संस्थानों के पास स्वयं के वित्तीय फंड, सुरक्षा व्यवस्था इत्यादि का न होना।

(4) संबंधित ब्रुनियादी अवसंरचना का अत्यधिक पुराना होना जो इतनी भीड़ का वहन नहीं कर सकती है।

(5) प्रशासन द्वारा भी पर्याप्त रक्षोपायों की व्यवस्था का न किया जाना।

(6) लोगों में जागरूकता का अभाव।

(7) पुलिस का आधुनिकीकरण तथा प्रशिक्षण की कमी।

(8) पुलिस में रिक्तियों की अधिकता, इत्यादि।

drishti | दृष्टि The Vision

इस प्रकार की घटना को रोकने के उपाय -

(1) स्थान का निरीक्षण, सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने के बाद ही आयोजन को अनुमति देना,

(2) भीड़ प्रबंधन के लिए ICT तथा आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग सुनिश्चित करना। जैसे → ड्रोन, लाउडस्पीकर, मैटल डिटेक्टर इत्यादि का प्रयोग

(3) धार्मिक तथा सामाजिक संस्थानों की भी इस संदर्भ में सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करना।

(4) अफवाहों की स्थिति में धार्मिक संस्थानों की जवाबदेहिता सुनिश्चितता हेतु, पर्याप्त वित्तीय दंड इत्यादि की व्यवस्था।

(5) समग्रतः पुलिस का प्रशिक्षण, आधुनिकीकरण

सारतः उस प्रकार भारत में समारोहों की सुरक्षापूर्ण आयोजन को सुनिश्चित किया जा सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

9. श्रद्धा को हाल ही में एक धर्मार्थ अस्पताल का चिकित्सा अधीक्षक नियुक्त किया गया है जो स्थानीय और आस-पास के क्षेत्रों के गरीब एवं वंचित लोगों के लिये एक महत्त्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवा सुविधा के रूप में कार्य करता है। अस्पताल के पास समुचित रूप से वित्त पोषण और पर्याप्त रूप से संसाधन होने के बावजूद, इसकी धर्मार्थ प्रकृति का अर्थ है कि कर्मचारियों का वेतन अपेक्षाकृत कम होना। इस वित्तीय बाधा ने एक चिंताजनक व्यवहार को उत्पन्न दिया है: कुछ कर्मचारियों ने शीघ्र या बेहतर सेवाओं के बदले में अमीर मरीजों से रिश्वत लेने की आदत विकसित कर ली है। यद्यपि इस अनैतिक व्यवहार के विषय में शिकायतें पहले भी सामने आई हैं, लेकिन अस्पताल के प्रबंधन ने आमतौर पर इस पर आँखें मूंद ली हैं और समस्या का सामना करने के बजाय इसे अनदेखा किया है।

(a) श्रद्धा के समक्ष उपस्थित नीतिशास्त्रीय दुविधा और उसके लिये उपलब्ध कार्यवाही के तरीके पर चर्चा कीजिये? साथ ही, उसके द्वारा उठाए गए कदम के पक्ष और विपक्ष पर भी चर्चा कीजिये।

(b) अगर आप श्रद्धा के स्थान पर होते/होती तो क्या करते/करती? (250 शब्द) 20

Shradha has recently been appointed as the Medical Superintendent of a charitable hospital that serves as a crucial healthcare facility for the poor and underprivileged populations both locally and from surrounding areas. Despite the hospital being well-funded and adequately resourced, its charitable nature means that staff salaries are relatively low. This financial constraint has led to a concerning practice: some staff members have developed a habit of accepting bribes from wealthier patients in exchange for expedited or enhanced services. Although complaints about this unethical behavior have surfaced in the past, the hospital's management has generally turned a blind eye, choosing to ignore the problem rather than confront it.

(a) Discuss the ethical dilemma confronting Shradha and the course of action available to her? Also, discuss pros and cons of her action

(b) What would you do if you were in Shradha's position? (250 Words) 20

प्रस्तुत प्रकरण धर्मार्थ संस्थानों में कम वेतन की समस्या के कारण भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति बढ़ने की समस्या को उजागर करता है। यहाँ श्रद्धा से चिकित्सा अधीक्षक के रूप में पेशेवर नैतिकता, दक्षता इत्यादि की अपेक्षा की गई है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

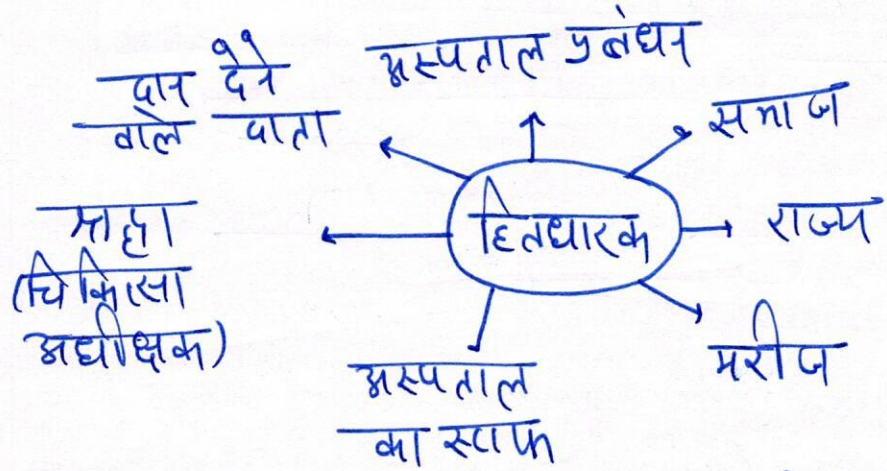

(a) महा के समक्ष उपस्थित नीति शास्त्रीय दुविधा:-

(1) पेशेवर दक्षता बनाम कर्मचारियों का हित

(2) भ्रष्टाचार की समस्या बनाम भ्रष्टाचार से प्रतिधामों का सुचारू रूप से चलते रहना।

(3) वरिष्ठों की मूकदर्शिता बनाम स्वयं की कोई पहल करना।

(4) अस्पताल की प्रतिष्ठा का मुद्दा।

(5) कल के दिन भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गरीब तथा वंचित वर्गों को भी प्रभावित कर सकती है।

(6) कर्मचारियों के प्रति करुणा का भाव बनाम उनके प्रति कठोर एक्शन लेना।

माहा के समक्ष उपलब्ध विकल्प

(1) समस्या को अनदेखा करे।
(2) कर्मचारियों को कठोर चेतावनी दे और ऐसा करने पर दंड की व्यवस्था।
(3) अस्पताल प्रबंधन को इस समस्या के बारे में सूचित करे तथा कर्मचारियों के वेतन को बढ़ाने का आग्रह करे।

विकल्प (1) का मूल्यांकन

गुण

(1) कर्मचारियों का हित सुनिश्चित तथा उनका आर्थिक कल्याण
(2) सेवाएं सुचारू रूप से चलती रहेंगी।

दोष

(1) कल को यह भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति और अधिक बढ़ सकती है।
(2) कौटिल्य दर्शन + अकुशल कर्म है।
(3) साधन - साध्य पवित्रता नहीं है।

drishti | दृष्टि The Vision

(4) वंचित वर्गों का कल्याण
प्रभावित होगा,

विकल्प 2 का मूल्यांकन

गुण
(1) भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति रुकेगी,
(2) अस्पताल की प्रतिष्ठा बेहतर होगी
(3) वंचित वर्गों का कल्याण सुनिश्चित होगा
(4) साधन- साध्य पवित्रता
(5) कुशल कर्म (बौद्ध धर्म)

दोष
(1) कर्मचारियों का कल्याण प्रभावित
(2) कर्मचारियों द्वारा नौकरी से त्यागपत्र
कर्मचारियों की कमी।
सेवाएं प्रभावित

विकल्प-3 का मूल्यांकन

गुण
(1) भ्रष्टाचार की समस्या कम होने की संभावना
(2) कर्मचारियों का कल्याण

दोष
(1) अस्पताल प्रबंधन बात नहीं भी मान सकता है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(3) वंचित वर्गों का कल्याण (२) महा की नौकरी पर खतरा आ सकता है।

(D) महा के स्थान पर मेरी कार्यवाही

(1) अस्पताल के स्टॉफ को कठोर चेतावनी तथा भ्रष्टाचार करने पर दंड।

(२) अस्पताल प्रबंधन को पत्र लिखकर या अवगत कराना एवं मिलकर समस्या से अवगत कराना तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा अनुनय का प्रयोग से कर्मचारियों की वेतन बढ़ाने हेतु तैयार करना।

(3) अस्पताल में CCTV इत्यादि का प्रयोग करना तथा कठोर निगरानी

मेरी कार्यवाही के तर्क

- संवैधानिक नैतिकता को वरीयता
- बौद्ध धर्म करुणा, कुशल कर्म
- गीता का निष्काम कर्म
- कांट का कर्तव्यवाद
- गांधी के अंत्योदय, सर्वोदय सिद्धांत

इस प्रकार अस्पताल में भ्रष्टाचार की समस्या से निपटा जा सकता है।

drishti | दृष्टि The Vision

10. आर्यन विश्वविद्यालय के छात्र श्रेयस शर्मा को अपने निवास कक्ष में "जाति विशेषाधिकार की समझ" शीर्षक वाला बुलेटिन बोर्ड दिखाई देता है। वह इसे प्रचार मानता है और मानता है कि यह उच्च जाति के छात्रों के साथ भेदभाव करता है। जवाब में, श्रेयस ने फेसबुक पर एक निंदा पोस्ट की, जिसमें प्रमुख रूढ़िवादी हस्तियों अमित वर्मा और राजन पटेल को टैग किया ताकि परिसर में अत्यधिक उदारवाद की ओर ध्यान आकर्षित किया जा सके। यह पोस्ट तुरंत वायरल हो गई, जिसका समर्थन और विरोध दोनों हुआ।

प्रिया नामक एक छात्र पत्रकार श्रेयस का साक्षात्कार लेती है ताकि बुलेटिन बोर्ड की आलोचना करने के उसके उद्देश्यों को समझा जा सके। श्रेयस, जिसने इस तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं की थी और अब अपने पोस्ट पर पछतावा करता है, प्रिया से लेख में अपना नाम गोपनीय रखने के लिये कहता है। प्रिया के सामने एक नैतिक दुविधा है: श्रेयस के नाम न बताने के अनुरोध का सम्मान करना या उसके सार्वजनिक बयानों के लिये उसे उत्तरदायी ठहराना।

(a) विवाद को संबोधित करने में विश्वविद्यालय प्रशासन की नीतिशास्त्रीय ज़िम्मेदारी का मूल्यांकन कीजिये। मुक्त भाषण और समावेशिता के बीच संतुलन बनाने के लिये वे क्या उपाय कर सकते हैं?

(b) श्रेयस द्वारा सामना किये गए विरोध के संदर्भ में न्याय की अवधारणा पर विचार कीजिये। विश्वविद्यालय यह कैसे सुनिश्चित कर सकता है कि इसमें शामिल सभी पक्षों के साथ उचित व्यवहार हो और उन्हें समुचित रूप से उत्तरदायी ठहराया जा सके?

(c) जिन आलोचनाओं को श्रेयस झेल रहा है उससे प्रिया अवगत हैं। साक्षात्कारकर्त्ता के प्रति समानुभूति और पत्रकारिता की निष्पक्षता बनाए रखने के बीच नीतिशास्त्रीय संतुलन पर चर्चा कीजिये। (250 शब्द) 20

Shreyas Sharma, a student at Aryan University, comes across the bulletin board titled "Understanding Caste Privilege" in his residence hall. He perceives it as propaganda and believes it discriminates against upper-caste students. In response, Shreyas posts a denouncement on Facebook, tagging prominent conservative figures Amit Verma and Rajan Patel to draw attention to what he sees as excessive liberalism on campus. The post quickly goes viral, attracting both support and significant backlash.

Priya, a student journalist, interviews Shreyas to understand his motives for criticizing the bulletin board. Shreyas, who did not anticipate the extent of the backlash and now regrets his post, asks Priya to keep his name confidential in the article. Priya faces an ethical dilemma: respecting Shreyas's request for anonymity or holding him accountable for his public statements.

(a) Evaluate the ethical responsibility of the university administration in addressing the controversy. What measures could they take to balance free speech and inclusivity?

(b) Reflect on the concept of justice in the context of the backlash faced by Shreyas. How can the university ensure that all parties involved receive fair treatment and are held accountable appropriately?

(c) Priya is aware of the backlash Shreyas has faced. Discuss the ethical balance between empathy for the interviewee and maintaining journalistic objectivity. (250 Words) 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रस्तुत प्रकरण विश्वविद्यालयों में प्रचलित जाति व्यवस्था की कठोरता तथा चर्चा की संस्कृति के न होने की समस्या को उद्घाटित करता है।

drishti | दृष्टि The Vision

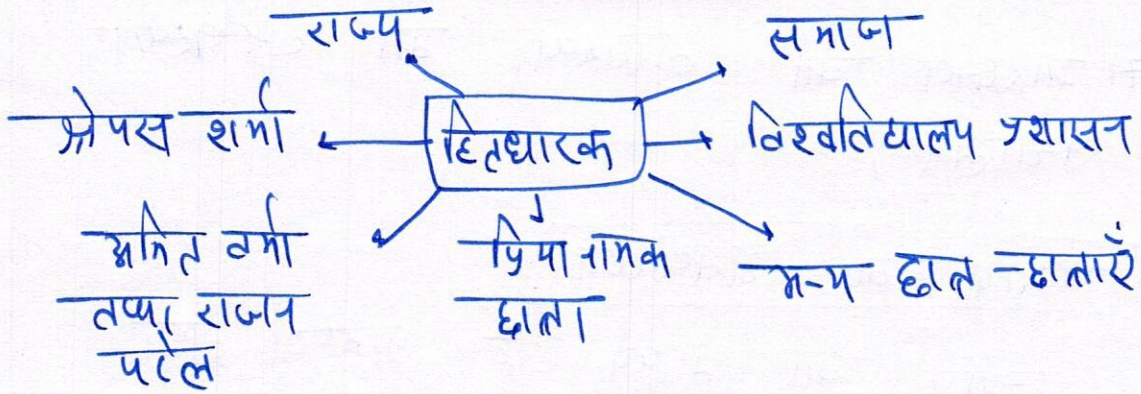

(a) विवाद को संबोधित करने में विश्वविद्यालय प्रशासन की जिम्मेदारी –

(1) प्रगतिशील वातावरण का निर्माण करना जातिगत अवधारणाओं को हतोत्साहित करना।

(2) स्वतंत्र तथा उन्मुक्त चर्चा की संस्कृति का वातावरण।

(3) सभी पक्षों की चिंताएँ सुनना तथा निराकरण करना।

(4) विज्ञान, तर्क, अलौकिकता इत्यादि मूल्यों पर बल देना।

(5) शोध, अनुसंधान इत्यादि पर बल।

(6) ऐतिहासिक उदाहरणों के माध्यम से विभिन्न जातियों के प्रति सहानुभूति तथा उनका सशक्तिकरण।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(7) आरक्षण की व्यवस्था का व्यवस्थित संचालन,

(6) न्याय की अवधारणा

न्याय का तात्पर्य है प्रतिष्ठा तथा अवसर की समता, जोपस द्वारा इसके विरोध में बातें कही गयी थी।

विश्वविद्यालय की भूमिका

(1) पर्सुएशन का प्रयोग → जातिगत पूर्वाग्रहों से निपटने हेतु

(2) EI (भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रयोग)

(3) बाध्यकारी संपर्क की अवधारणा

(4) सहयोग, साहचर्य पर बल देकर जातिगत कठोरता को कम करने का प्रयास।

(5) महापुरुषों जैसे कि अंबेडकर, फुले जी की जीवनी का प्रयोग कर अभिवृत्ति परिवर्तन।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(b) जातिगत पूर्वाग्रहों को बढ़ावा देने वाले विद्यार्थियों के प्रति कठोर कार्यवाही।

(c) साक्षात्कर्ता के प्रति समानुभूति और निष्पक्षता बनाए रखने पत्रकारिता की के प्रति नीतिशास्त्रीय संतुलन

(1) पत्रकारिता के मानदंडों को ऊँचा रखना जिससे व्यक्तिगत आग्रहों के प्रति कम जगह हो।

(2) निष्पक्ष पत्रकारिता पर बल।

(3) स्वनियमन के सिद्धांत का पालन।

इस प्रकार से उपर्युक्त प्रकरण का समाधान किया जा सकता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

11. भारत में एक बड़ी बहुराष्ट्रीय आईटी कंपनी में अनुभवी विक्रय प्रतिनिधि राहुल ने कंपनी के भीतर, विशेष तौर पर अपने सहकर्मी अर्जुन के साथ गहरी मित्रता विकसित की थी। पिछले कुछ महीनों में, अर्जुन ने राहुल को अपनी पत्नी, बच्चों और बूढ़े माता-पिता का भरण-पोषण करने सहित अपने गंभीर वित्तीय संघर्षों के बारे में बताया था। अर्जुन ने काम पर जोखिम भरे कदमों का संकेत दिया था, लेकिन कभी भी विशिष्ट बातें नहीं बताईं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जब अर्जुन ने अचानक कंपनी छोड़ दी, तो राहुल हैरान और संदिग्ध हो गया। उसने अर्जुन के कार्यभार को अपने नियंत्रण में ले लिया और जल्द ही उसे पता चल गया कि अर्जुन की धोखाधड़ी गतिविधियों से कंपनी को वित्तीय नुकसान हुआ है। अर्जुन ने एक योजना बनाई थी जिसमें फर्जी विक्रय ऑर्डर, अग्रिम कमीशन भुगतान प्राप्त करना और विलंबित वितरण के लिये बाहरी कंपनी के साथ मिलीभगत करना शामिल था, जिससे गैर-मौजूद विक्रय के लिये कमीशन प्राप्त किया जा सके।

उनकी आपस की बातचीत पर विचार करते हुए, राहुल को बेचैनी महसूस हुई, उसे अनुभव हुआ कि अर्जुन की हताशा ने उसे धोखाधड़ी करने के लिये प्रेरित किया। उसने प्रश्न किया कि क्या वह स्थिति को रोक सकता था और उसे ज़िम्मेदारी का अहसास हुआ। अर्जुन के चले जाने और आंतरिक जाँच शुरू होने के बाद, राहुल को नैतिक दुविधा का सामना करना पड़ा कि जो वह जो जानता था उसे उजागर करे या नहीं।

राहुल अपनी व्यक्तिगत सत्यनिष्ठता बनाए रखना चाहता था और कंपनी को इस मुद्दे को समझने में सहायता करना चाहता था, लेकिन उसे भय था कि सब कुछ उजागर करने से उसकी स्थिति खतरे में पड़ सकती है और उसे नौकरी से निकाला जा सकता है। वह अर्जुन की स्थिति से समानुभूति रखता था, वह अपने मित्र की रक्षा करने और अपने नीतिशास्त्रीय मानकों को बनाए रखने के बीच उलझन में था। राहुल इस बात से जूझ रहा था कि क्या सच्चाई को उजागर करना उसकी नौकरी और मित्रता को खोने के लायक है, खासकर तब जब कंपनी का वित्तीय नुकसान भयावह नहीं था और उत्पाद जीवन-मरण का प्रश्न नहीं था।

(a) पेशेवर संदर्भ में नीतिशास्त्रीय निर्णयन में समानुभूति का क्या प्रभाव होना चाहिये? क्या किसी सहकर्मी के व्यक्तिगत संघर्षों को समझना उसके अनैतिक कार्यों को उचित ठहरा सकता है या कम कर सकता है?

(b) राहुल के निर्णय में सबसे महत्त्वपूर्ण नीतिशास्त्रीय मूल्य क्या हैं?

(c) राहुल के निर्णय को कौन-से कारक प्रभावित करेंगे? (250 शब्द) 20

Rahul, an experienced sales representative at a large multinational IT company in India, had developed strong friendships within the company, especially with his colleague Arjun. Over recent months, Arjun had confided in Rahul about his severe financial struggles, including supporting his wife, children, and aging parents. Arjun had hinted at risky moves at work but never disclosed the specifics.

When Arjun abruptly left the company, Rahul was shocked and suspicious. He took over Arjun's sales territories and soon discovered the financial damage caused by Arjun's fraudulent activities. Arjun had orchestrated a scheme involving fictitious sales orders, receiving upfront commission payments, and colluding with an external company to delay deliveries, thereby securing commissions for non-existent sales.

Reflecting on their conversations, Rahul felt uneasy, realizing Arjun's desperation likely drove him to commit fraud. He questioned whether he could have prevented the situation and felt a sense of responsibility. With Arjun gone and an internal investigation underway, Rahul faced a moral dilemma about whether to disclose what he knew.

Rahul wanted to maintain his personal integrity and help the company understand the issue but feared that revealing all could jeopardize his position and lead to termination. He empathized with Arjun's plight, feeling conflicted between protecting his friend and upholding his own ethical standards. Rahul wrestled with whether exposing the truth was worth potentially losing his job and friendship, especially since the company's financial loss was not catastrophic and the product was not life-or-death.

(a) How should empathy influence ethical decision making in a professional context? Can understanding a colleague's personal struggles justify or mitigate unethical actions?

(b) What are the most significant ethical values at stake in Rahul's decision?

(c) What factors should influence Rahul's decision? (250 Words) 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पेशेवर जीवन में आने वाली नैतिक प्रतिधाओं जैसे कि पेशेवर नैतिकता बनाम स्वहित या स्वजनों का हित इत्यादि को संबोधित करता हुआ यह प्रकरण राहुल के समक्ष एक जटिल निर्णयन की चुनौती पेश करता है।

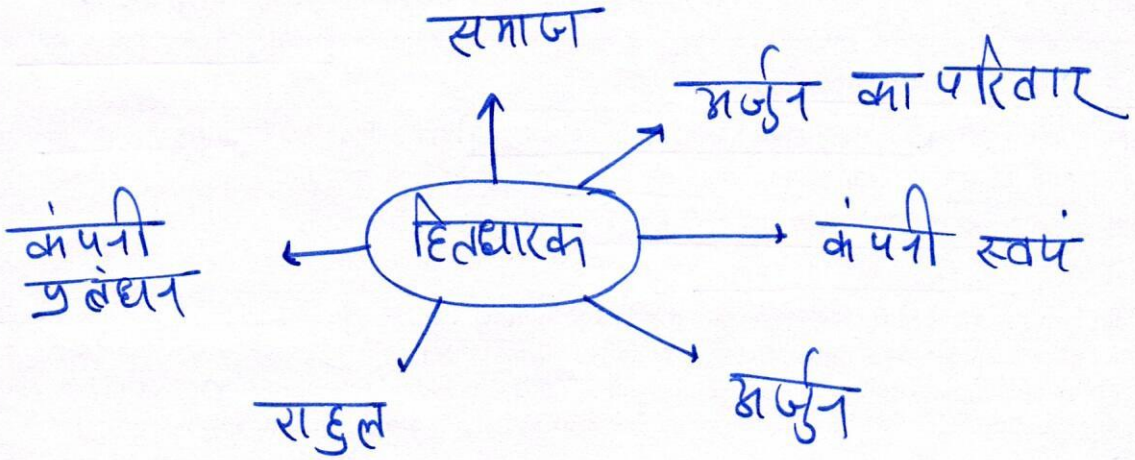

(a) पेशेवर संदर्भ में समानुभूति का निर्णयन में प्रभाव –

(i) समानुभूति, बेहतर कार्य संस्कृति के

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निर्माण में सहायक हो सकती है जैसे कर्मचारियों की समस्या को समझने तथा निराकरण करने में।

(2) हालांकि इसे स्वयं की कमजोरी नहीं बनने देना चाहिए क्योंकि अत्यधिक सहानुभूति कर्मचारी की गलतियों को माफ करके कंपनी को नुकसान पहुंचा सकती है।

कर्मचारी के व्यक्तिगत संघर्ष को समझना इसके नैतिक कार्यों को सही ठहरा सकता है।

---

(1) कर्मचारी के व्यक्तिगत संघर्ष को समझना उसकी सहायता हेतु तो तैयार कर सकता है किंतु उसके नैतिक कार्यों को सही ठहराने का यह पर्याप्त आधार नहीं हो सकता है।

(2) पेशेवर नैतिकता, दक्षता, कंपनी के प्रति दायित्व जैसे मूल्य प्राथमिक होने चाहिए।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(b) राहुल के निर्णय में महत्वपूर्ण नीतिशास्त्रीय मूल्य –

राहुल के समक्ष मूल नैतिक दुविधा यह है कि –

(1) कंपनी के प्रति जवाबदेहिता बनाम मित्रता का
(2) पेशेवर नैतिकता बनाम स्वजन का हित
(3) पेशेवर दक्षता बनाम अर्जुन के कल्प को प्राप्त करना।

अतः स्पष्ट है कि राहुल के निर्णय में पेशेवर नैतिकता, जवाबदेहिता जैसे नीतिशास्त्रीय मूल्य केंद्र में हैं।

(c) राहुल के निर्णय को निम्न कारक प्रभावित करेंगे?

(1) मित्रता का मूल्य,
(2) कंपनी के प्रति प्रतिबद्धता

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(3) पेशेवर दक्षता तथा नैतिकता
(4) नौकरी की सुरक्षा का मुद्दा,
(5) अर्जुन के प्रति समानुभूति।

राहुल के नैतिक निर्णय की रूपरेखा इस प्रकार होनी चाहिए -
(1) वस्तुनिष्ठ जाँच सुनिश्चित करना।
(2) अर्जुन के पक्ष को समझना
(3) यदि जाँच में स्पष्ट होता है कि अर्जुन दोषी है तो कंपनी को अनुशासनात्मक कार्यवाही हेतु अनुशंसा करना।
(4) व्यक्तिगत क्षमता में अर्जुन के परिवार को सहायता प्रदान कर सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत जीवन की चुनौतियों से प्रेरित होकर भ्रष्टाचार को तरीयता नहीं दी जा सकती है। यह साधन - साध्य पवित्रता, नैतिक मूल्यों के खिलाफ है।

drishti | दृष्टि The Vision

12. मुंबई में रहने वाली 28 वर्षीय सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर निशा ने विगत् पाँच वर्षों में इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर काफी संख्या में फॉलोअर्स प्राप्त किये हैं। अपनी जीवनशैली संबंधी कंटेंट के लिये जानी जाने वाली निशा प्राय: फैशन, ब्यूटी और वेलनेस सेक्टर के ब्रांड्स के साथ सहभाग करती हैं। उनके फॉलोअर्स उनकी प्रामाणिकता और विश्वसनीय कंटेंट के लिये उनकी प्रशंसा करते हैं और उन्होंने अपने व्यक्तिगत मूल्यों के अनुरूप उत्पादों का प्रचार करने के लिये प्रतिष्ठा बनाई है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निशा को अनन्या अरोड़ा ने एक नए आहार पूरक का प्रचार करने के लिये संपर्क किया है जो जल्दी वजन घटाने का वादा करता है। अभियान एक आकर्षक सौदा प्रदान करता है, जो निशा द्वारा अब तक किसी एकल साझेदारी से अर्जित की गई राशि से कहीं अधिक है। राहुल, उसका प्रबंधक, उसे प्रस्ताव स्वीकार करने के लिये प्रोत्साहित करता है, वित्तीय लाभ और अधिक फॉलोअर्स प्राप्त करने की क्षमता पर जोर देता है।

हालाँकि, निशा को कुछ संदेह है। उत्पाद पर शोध करने पर, उसे स्वास्थ्य विशेषज्ञों से मिली-जुली समीक्षाएँ और चिंताएँ मिलती हैं, जिनमें डॉ. अरविंद राव भी शामिल हैं, जो ऐसे सप्लीमेंट्स की सुरक्षा और प्रभावशीलता पर प्रश्न उठाते हैं। निशा जानती है कि उसके कई फॉलोअर्स स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती संबंधी सलाह के लिये उससे परामर्श लेते हैं और संभावित रूप से असुरक्षित उत्पाद का प्रचार करने से उनकी विश्वसनीयता को नुकसान पहुँच सकता है और उसके फॉलोअर्स जोखिम में पड़ सकते हैं।

निशा को प्रिया ने सुझाव दिया कि उसे नैतिकता के बारे में बहुत अधिक चिंता नहीं करनी चाहिये। उसका तर्क है कि फॉलोअर्स अपनी पसंद के लिये स्वयं ज़िम्मेदार हैं और इस तरह की साझेदारी इंडस्ट्री में आम बात है। प्रिया ने स्वयं भी बिना किसी विरोध का सामना किये इसी तरह के उत्पादों का प्रचार किया है।

निशा अब दोराहे पर खड़ी है। एक तरफ, वह इस प्रस्ताव को स्वीकार कर सकती है, अपनी कमाई को काफी बढ़ा सकती है और अपने फॉलोअर्स की संख्या बढ़ा सकती है। दूसरी तरफ, किसी ऐसे उत्पाद का प्रचार करना जिस पर उसे पूरा विश्वास नहीं है, उसके मूल्यों से समझौता कर सकता है और संभवत: उसके फॉलोअर्स को खतरे में डाल सकता है।

उपरोक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

(a) क्या प्रभावशाली लोगों के लिये उन उत्पादों का प्रचार करना नीतिशास्त्रीय रूप से सही है, जिनका वे व्यक्तिगत रूप से उपयोग नहीं करेंगे या अपने प्रियजनों को उनकी प्रेरक शक्ति के कारण अनुशंसा नहीं करेंगे? यह "किसी को हानि न पहुँचाएँ" सिद्धांत के साथ कैसे संरेखित होता है?

(b) क्या प्रभावशाली व्यक्तियों को उनके द्वारा समर्थित उत्पादों से होने वाले संभावित नुकसान के लिये उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिये?

(c) एक प्रभावशाली व्यक्ति को अपने वित्तीय हितों और अपने दर्शकों के प्रति नीतिशास्त्रीय दायित्वों के बीच संघर्ष का समाधान कैसे करना चाहिये? (250 शब्द) 20

Nisha, a 28-year-old social media influencer based in Mumbai, has gained a significant following on Instagram and YouTube over the past five years. Known for her lifestyle content, she frequently collaborates with brands in the fashion, beauty, and wellness sectors. Her followers admire her for her authenticity and relatable content, and she has built a reputation for endorsing products that align with her personal values.

Nisha is approached by Ananya to promote a new dietary supplement that promises quick weight loss. The campaign offers a lucrative deal, far more than Nisha has ever earned from a single partnership. Rahul, her manager, encourages her to accept the offer, emphasizing the financial benefits and the potential to gain more followers.

However, Nisha has reservations. Upon researching the product, she finds mixed reviews and concerns from health experts, including Dr. Arvind Rao, who questions the safety and effectiveness of such supplements. Nisha is aware that many of her followers look up to her for health and wellness advice, and promoting a potentially unsafe product could harm her credibility and put her followers at risk.

Priya, her friend, suggests that Nisha should not worry too much about the ethics, arguing that followers are responsible for their own choices and that such partnerships are common in the industry. Priya herself has promoted similar products without facing any backlash.

Nisha is now at a crossroads. On one hand, she could accept the deal, significantly boost her earnings, and expand her reach. On the other hand, promoting a product she does not fully trust could compromise her values and possibly endanger her followers.

Based on the above case study, answer the following questions:

(a) Is it ethical for influencers to promote products they would not personally use or recommend to loved ones, given their persuasive power? How does this align with the "do no harm" principle?

(b) Should influencers be held accountable for the potential harm caused by the products they endorse?

(c) How should an influencer navigate the conflict between their financial interests and their ethical obligations to their audience? (250 Words) 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रस्तुत प्रकरण वर्तमान समय में प्रचलित भ्रामक विज्ञापनों की समस्या को साथ लेकर प्रभावशाली लोगों के समक्ष आने वाली ~~विभिन्न~~ नैतिक दुविधाओं को उद्घाटित करता है। जिसमें प्रश्न [illegible] यह है कि क्या वे अपने स्वयं के हितों पर ध्यान दें या समाज के प्रति भी उनका कुछ दायित्व बनता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

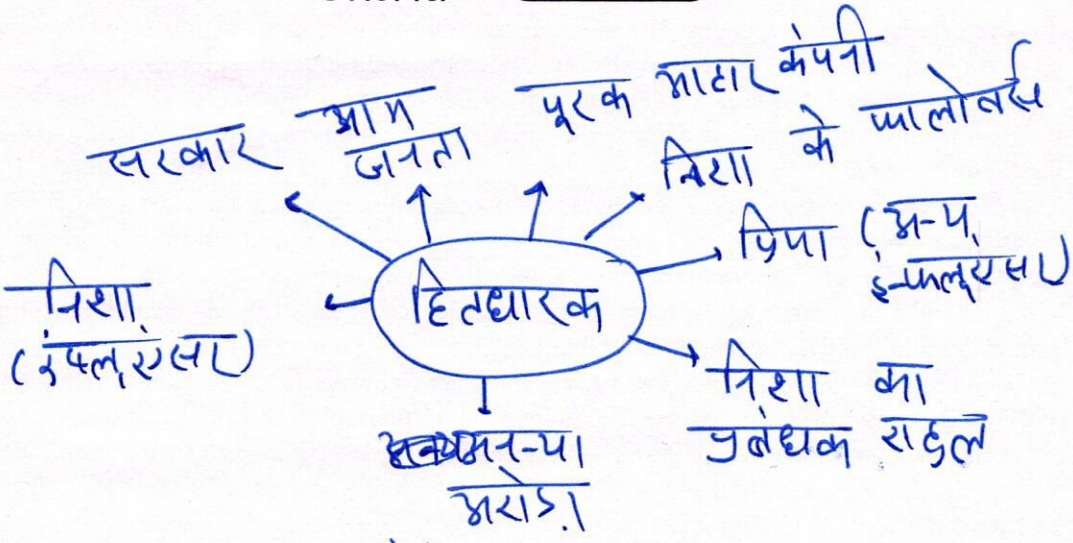

(v) प्रभावशाली लोगों द्वारा ऐसे उत्पादों का प्रचार करना नीतिशास्त्रीय रूप से सही नहीं माना जा सकता है क्योंकि —

(1) ऐसे उत्पादों की पर्याप्त जाँच इत्यादि नहीं हुई है।

(2) इस उत्पाद का प्रयोग प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा स्वयं नहीं किया गया है। उदा० बॉलीवुड हीरो शिक्षा एप का प्रचार

(3) ऐसे उत्पाद समाज में गलत प्रवृत्तियों तथा अस्वास्थ्यकर उत्पादों को बढ़ावा दे सकते हैं जिससे

drishti | दृष्टि The Vision

नागरिकों का स्वास्थ्य खतरे में पड़ सकता है।

उदा० सेलिब्रिटी द्वारा पान गुटखा तथा सिगरेट का प्रचार करना।

इस तरह ऐसे उत्पाद 'किसी को हानी न पहुंचाएं' सिद्धांत के साथ संदेहित नहीं हो पाते हैं।

(b) निश्चित रूप से ऐसे प्रभावशाली व्यक्तियों को साथ उन उत्पादों की कंपनियों को संभावित नुकसान के लिए उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिए।

तर्क –
- आर्थिक लाभ जो ले रहे हैं तो हानि भी उन्हें उठानी चाहिए।
- पर्याप्त जागरूकता के साथ विज्ञापन करेंगे,
- जनता में भी जागरूकता आयेगी

उल्लेखनीय है कि हाल ही में उपभोक्ता मंत्रालय ने इस संदर्भ में दिशानिर्देश (2023) जारी किये हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(c) प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा संघर्ष समाधान का तरीका -

(1) पर्याप्त अनुसंधान कर विज्ञापनों को स्वीकार करना।
(2) फालोवर्स के प्रति नैतिक दायित्व के मूल्य को अपनाना।
(3) अत्यधिक धन के पीछे न भागकर अपनी विश्वसनीयता तथा ब्रांड इमेज बनाने पर ध्यान देना।
(4) विश्वसनीय उत्पादों का ही विज्ञापन करना।
(5) ग्राहक जागरूकता बढ़ाने के लिए अतिरिक्त हस्तक्षेप वह स्वयं के स्तर से कर सकता है।

भ्रामक विज्ञापन हमारे आज के समय की प्रमुख समस्याओं में से एक है अतः इन्फ्लुएंसर को इस संदर्भ में अपने दायित्वबोध से संचालित होकर कार्य करना चाहिए।

drishti | दृष्टि The Vision

Space for Rough Work

(रफ कार्य के लिये स्थान)

drishti | दृष्टि The Vision

Space for Rough Work

(रफ कार्य के लिये स्थान)